TANYA
Assistant Professor (Guest Faculty)
Department of economics
D.K. College, Dumraon (Buxar)
B.A. economics
Part - I Paper - 01.
Topic - Elasticity of Demand

जब किसी वस्तु की कीमत घटती है तो इसकी माँग बढ़ती है और जब उसकी कीमत बढ़ती है तो उसकी माँग मात्रा घटती है।

इसे सामान्यत माँग का नियम (Law of Demand) कहा जाता है।

यह माँग का नियम हमे यह नहीं बताता है कीमत मे परिवर्तन होने के फलस्वरूप वस्तु की माँग मात्रा में कितनी वृद्धि अथवा कमी हुई हैं।

वस्तु की कीमत में परिवर्तन के फलस्वरूप उसकी माँग मात्रा कितनी बदलती है यह बात हमें माँग की मूल्य-सापेक्षता (elasticity of demand) की धारणा से पता चलती है।

माँग की सापेक्षता की धारणा में अभिप्राय किसी वस्तु ~~वस्तु~~ की माँग-मात्रा या उसकी कीमत में परिवर्तन, लोगों की आय अथवा

सम्बन्धित वस्तुओं की कीमतों में परिवर्तन के फलस्वरूप बदलना है।

माँग की सापेक्षता की तीन धारणाएँ हैं –

1. मूल्यसापेक्षता (Price Elasticity)
2. आय-सापेक्षता (Income Elasticity)
3. प्रति-सापेक्षता (Cross-Elasticity).

माँग की मूल्यसापेक्षता से अभिप्राय कीमत में परिवर्तन के फलस्वरूप वस्तु की माँग-मात्रा में कमी या वृद्धि से है।

माँग की आयसापेक्षता से अभिप्राय आय में परिवर्तन होने से माँग मात्रा में घट-बढ़ होना है।

वस्तु की माँग की प्रतिसापेक्षता से तात्पर्य किसी अन्य सम्बन्धित वस्तु की जो चाहे स्थानापन्न वस्तु हो अथवा पूरक हो की कीमत बदलने में वस्तु की माँग में परिवर्तन होना है।